E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मोहना के तोमर राजपूत जागीरदारों का राजनैतिक एवं ऐतिहासिक प्रासंगिकता

नितेश धनेलिया

विषय : इतिहास

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/07/2025

Paper date Publishing Date

10/07/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.16755242

IMPACT FACTOR 5.924

ABSTRACT

इतिहास में घटनाओं के प्रायः पुनरावृति देखी जाती है, इसका तात्पर्य यह नहीं है, कि इसमें कोई घटना होती ही नहीं, किन्तु असाधारण नई घटना भी भविष्य में फिर होने की आशा रखती है। मोहना के तोमर राजपूत विशेष रूप से सिंधिया परिवार से जुड़े हुए थे विभिन्न अभिलेखों से प्राप्त हुआ, जिसके द्वारा तोमर राजपूतों की परम्पराएँ रीति रवाज और तौर तरीके उनके किस प्रकार के थे । तोमर जागीरदारों के सामाजिक रीति-रवाज, धार्मिक परम्पराएँ एवं सांस्कृतिक जीवन शैली अन्य राजपूतों से अलग थी। मोहना की गढ़ी से शोधार्थी ने जाके स्वयं साक्षात्कार लिया कि वर्तमान में तत्कालीन स्थितियों के सम्बंध में जानकारी लेने का प्रयास किया।

हमारे समाज में आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक वर्णव्यवस्था का विशेष महत्त्व है इसके अलावा वर्ण, वर्ग एवं जति ने समाज को विभिन्न भागों में बाँट रखा है। वैदिककाल से लेकर वर्तमान काल तक वर्ण व्यवस्था में बहुत से परिवर्तन हुए है। वर्ण से तात्पर्य वृत्ति से है, किसी विशेष व्यवसाय के चुनने या वरण करने से है। समाज शास्त्र में वर्ण का अर्थ वर्ग से है, जो अपने चुने

हुए व्यवसाय में संलग्न है और अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण समाज वर्गों अथवा समूहों से सर्वथा अलग होता है।

मुख्यबिन्दु : इतिहास, पुनरावृति, परम्पराएँ, रीति रवाज, व्यवस्था

आर्य वर्ण और दास वर्ण अथवा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण व्यवस्था में रह गये। प्रारंभिक तीन वर्षों में आर्यों एवं चतुर्थ वर्ण में अनार्य अथवा दास को शूद्र वर्ण के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है। पालनकर्ता और

सत्य के अनुसार चलने वाला होना चाहिए। इन नियमों पर अत्याधिक जोर दिया गया है । क्षत्रिय शासक सदैव धर्म से डरते थे

" ऋतानानां निषेदतु साम्राज्याय सुक्रतु ।

धृतता क्षत्रिया क्षत्रमाशतु ।।" (1)

ऐसा कोई काम नहीं करना चाहते थे जो धर्म के विपरीत हो । मुगलकाल (1526-1761 ई.) में हिन्दू समाज में व्याप्त जाति प्रथा के बन्धन शिथिल होने लगे। हिन्दू निम्न जाति एवं वर्ग से संबंधित लोग इस्लाम के मिल्लत (भाईचारे) के सिद्धांत से प्रेरणा प्राप्त करके इस्लाम की

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ओर आकर्षित होने लगे, जिसके फलस्वरूप सामाजिक क्षेत्र में नवीन युग का आविर्भाव हुआ। इस सम समाज सामन्तवादी आधार पर संगठित था, जिसका प्रमुख बादशाह होता था । मुगलकालीन समाज दो भागों में विभाजित था:-

हमारा समाज विभिन्न प्रकार जाति, उपजाति एवं गोत्रों में बँटा है। जैसे हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन एवं ईसाई है सभी को धर्म के आधार पर बाँट रखा है। हिन्दू प्रमुख रूप से अवतारवाद में विश्वास रखता है, जबकि मुस्लिम अवतारवाद नहीं मानते किन्तु दो भागों में बँटे है, शिया एवं सुन्नी, बौद्ध लोग भगवान बुद्ध को मानते हैं, इसके अलावा जैन तीर्थंकर को मानते है एवं ईसाई समुदाय प्रभु ईशु को मानते हैं। बौद्ध को मानने वाले दो भागों में विभाजित हैं हीनयान एवं महायान, जैन लोग श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में विभाजित हैं तथा ईसाई समुदाय कैथोलिक एवं प्रोटोस्टंट में विभाजित हैं। मुस्लिम समाज में सर्वोच्च स्थान बादशाह का था। शाही परिवार और अभिजात वर्ग स्थित थे, जो राज्य के सभी महत्वपूर्ण पदों पर एकाधिकार जमाये हुए थे। बादशाह और अभिजात वर्ग के बाद तीसरा स्थान मध्यम वर्ग को प्राप्त था, जिसमें छोटे व्यापारी, लेखक, काजी और छोटे मनसबदार आदि सम्मिलित थे। इस वर्ग के लोगों के पास धन और बुद्धि दोनों थे। अतः कुछ अत्यन्त सम्पन्न लोगों को छोड़कर शेष का जीवन सरल था । चतुर्थ वर्ग में कारीगर, कृषक, सेवक, सिपाही और अत्यन्त छोटे दुकानदार और शिल्पी सम्मिलित थे। उनकी आर्थिक दशा अत्यन्त हीन थी। इनको बहुत कम वेतन मिलता था। सबसे दयनीय स्थिति दासों की थी। भारतीय मुसलमान छोटे-मोटे कार्यों के द्वारा अपना जीवन यापन करते थे और विदेशी मुसलमानों की आय पर ही जीवन व्यतीत करने के लिये

बाध्य |

श्रीकृष्ण ने गीता में क्षत्रियों का निम्न प्रकार से उल्लेखस किया है, कि क्षत्रियों में शौर्य, वीरता, तेज एवं त्याग होना चाहिए, तभी क्षत्रिय वंश जीवित रह सकता है

"ततः कृष्णो महाभागः पुनरेव युधिष्ठरः ।

ब्राह्मणा वां शतं श्रेष्ठ मुखा देवा सृजत प्रभु ॥

बाहुभ्यां क्षत्रिय शत वैश्यानामुरुतः शतम् ।

पदभ्यां शूद्रं शतं चैव केशवो भरतर्षभ ॥ " (2)

हिन्दू समाज विभिन्न जातियों और उपजातियों में बंटा हुआ था। मुगल- काल में हिन्दुओं को राज्य के बड़े पदों पर नियुक्त किया जाने लगा था। अकबर के शासनकाल में कई हिन्दुओं को उच्च मनसबदार के पद पर नियुक्त किया गया था। समाज में ब्राह्मणों का सर्वाधिक सम्मान था। दसवीं सदी के अरब लेखक अलमसूदी ने उल्लेख किया है कि हिन्दुस्तानियों में ब्राह्मण ही सर्वाधिक योग्य थे। परवर्ती लेखक अलदूदरीसी ने भी ब्राह्मणों को हिन्दू जाति में सर्वोपरि माना है। ब्राह्मण जाति के लोग व्यापार एवं कृषि कार्य भी करने लगे थे। राजपूतों को सैनिक के रूप में ख्याति प्राप्त थी। पूर्व मध्ययुगीन लेखक इब्नखुदजवा के अनुसार 'क्षत्रियों के सम्मुख सब लोग सिर झुकाते थे, लेकिन ये किसी को सिर नहीं झुकाते।' अलबरूनी के अनुसार 'क्षत्रिय वेद पढ़ता था, पढ़ाता नहीं। वह यज्ञ करता था और पुराणों के अनुरूप आचरण करता था। वह प्रजा पर शासन करता और उसकी रक्षा करता था । (3)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मुगल शासक गुणों के आधार पर ब्राह्मण, राजपूतों और कायस्थों को राज्य में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त करते थे और ज्योतिषियों, कवियों और विद्वानों को उनकी योग्यतानुसार दरबार में सम्मान प्राप्त था। कार्य के आधार पर हिन्दू समाज में कई नवीन उपजातियों का उदय हुआ। (4)

पार्श्वनाथ चरित में तंवरकाल में चार वर्णों के व्यक्तियों-ब्राह्मण, क्षत्रियों, वैश्य एवं शूद्र का उल्लेख प्राप्त होता है। इस समय जाति व्यवस्था श्रम विभाजन पर आश्रित थी। तुलसीदास का आविर्भाव 16 वीं शताब्दी में हुआ था। उन्होंने रामचरित मानस की रचना संवत् 1631 (1574 ई.) में आरंभ की थी। महाकाव्य काल में वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म हो गया था। प्रभावशाली और धनी समूहों को जातीय सोपान में उच्चतम स्थान मिलता था। जबकि आबादी के निम्नतम सामाजिक आर्थिक समूहों को निम्न जातियों में स्थान मिला। हिन्दुओं में कुछ व्यवसाय - कुछ कुलों, श्रेणियों एवं जातियों तक सीमित हो गये, कुछ जातियां ही व्यवस्था के आधार पर बन गईं थीं। (5) 'धण्णकुमार चरिउ' में इधू पटवारी जाति का उल्लेख किया है। यह वैश्य जाति के अन्तर्गत होते थे। उनका कार्य भूमि का लेखा-जोखा रखना था। सूत्रों के अतिरिक्त प्रायः सभी वर्ण और जाति के लोग इस क्षेत्र में कार्य करते थे। शूद्रों के इस क्षेत्र में कार्य न करने का कारण उनमें शिक्षा का अभाव होना था। पटवारी के कार्य के लिये शिक्षित होना अनिवार्य था। पटवारी का कार्य ब्राह्मण, कायस्थ, वैश्य आदि सभी जाति के लोग करते थे, इनके अतिरिक्त मुस्लिम धर्मानुयायी भी पटवारी का कार्य करते थे। अग्रवाल एवं जायसवाल नामक एक अन्य जातियों के उल्लेख भी प्राप्त होते हैं, जो वैश्य वर्ग की ही शाखायें थीं। कायस्थ जाति (वर्ग) का उल्लेख हिन्दू समाज के चारों वर्णों में नहीं मिलता है। इस जाति का विकास अलग वर्ग और जाति के रूप में हुआ। पद्मपुराण के उल्लेख के अनुसार कायस्थ की उत्पत्ति ब्रह्मा की काया से हुई है। श्री हर्ष ने कायस्थ की उत्पत्ति यम के लिपिक चित्रगुप्त से मानी है। (6) कायस्थों का मुख्य व्यवसाय लेखन कार्य था। तंवरकालीन 'कायस्थ वर्ग के व्यक्तियों का उल्लेख प्राप्त होता है। कायस्थ वर्ग का उल्लेख नवीं सदी से 'कायस्थ जाति' के रूप में होने लगा। समाज में 108 पेशेवर जातियों का विवरण मिलता है। ये पेशेवर जातियां विभिन्न प्रकार के पेशे अथवा व्यवसाय से समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

मध्यकालीन समाज में शूद्र वर्ण की स्थिति अत्यन्त हीन एवं दयनीय थी। इस वर्ण के व्यक्तियों को विद्याध्ययन, व्यापार और सैनिक बनने का अधिकार नहीं था। शूद्रों का मुख्य कर्तव्य था उच्च वर्ग (ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य) की सेवा करना। शूद्रों के दो वर्ग थे पान्या एवं अपान्या। (7) पान्या अनिरखसित शूद्रों के उस वर्ग को कहते थे, जिसे उच्च वर्ण के व्यक्ति स्पर्श कर सकते थे और अपान्या निरवसित शूद्रों का वह वर्ग था, जिसे अस्पृश्य माना जाता था। हिन्दू समाज में जाति प्रथा का स्वरूप और भी अधिक जटिल हो गया था। अस्पृश्य के स्पर्श मात्र से अपवित्र होने का विचार व्यक्ति को मानसिक रूप से परेशान कर देता था। (8)

मोहना ग्राम में तंवर जागीरदारों के काल में चारों वर्ण के लोग ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद थे। इनके अतिरिक्त मुगलकाल से स्थापित यहां की जागीर में मुसलमान भी निवास करते थे। ये सभी तत्कालीन समय में अपनी- अपनी सामाजिक परम्पराओं का निर्वाह करते हुए राजकीय कार्यों में भी सहयोग प्रदान कर रहे थे। विशेष अवसरों पर जागीरदार राव साहब दरबार लगाते थे। दरबार में विभिन्न पदों पर कार्यरत अधिकारी कर्मचारियों के अतिरिक्त धार्मिक, सामाजिक उत्सवों में गांव के जनसमूह में पुरुष, स्त्रियां और बच्चे भी भाग लेते थे। दरबार में राव साहब के द्वारा नियुक्त किये गये व्यक्ति उनके दोनों ओर खड़े होकर चंवर ढुलाते थे। गढ़ी में लगभग 55 फीट चौड़ा दरबार हल है। विशेष उत्सवों पर यहां गांव के सभी लोग एकत्रित होते थे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मोहना के तोमर शिव एवं शक्ति के उपासक हैं। राजपूतों की गढ़ी में शिवलय बना हुआ है, जिसमें शिव और पार्वती विराजमान हैं। दोनों ही सृष्टि के सृजनकर्ता हैं शिव का सम्बंध शक्ति से है और शक्ति का सम्बंध शिव से है, दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं।

मुगलकाल में मोहना ग्राम स्थापित हुआ था तभी से यहां पर हिन्दू, जैन एवं मुस्लिम धर्मावलम्बी जन समूह निवास कर रहा है। गांव में जागीरदार कालीन हिन्दू, जैन मंदिर एवं मस्जिद स्थापित हैं। यहां पर हिन्दू देवी देवताओं के मंदिरों में श्यामल माता का मंदिर, गणेश की प्रतिमा, हनुमान मंदिर, गढ़ी के मुख्य भवन के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे शिवलिंग एवं नंदी की मूर्ति, श्यामल माता के मंदिर के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे राधा कृष्ण, विष्णु लक्ष्मी की प्रतिमा एवं अनेक शिवलिंग स्थापित हैं। गांव में जैन मंदिर एवं मस्जिद भी है। ये भी जागीरदार कालीन ही हैं। यहां के ग्रामवासी अपने-अपने धर्मानुसार धार्मिक कृत्यों के लिए स्वतंत्रत थे। जागीरदार कालीन प्रमुख पूजागृह इस प्रकार से थ।

मंदिर हमेशा आस्था एवं पूजा के प्रतीक माने जाते हैं। प्रत्येक मंदिर का विशेष महत्त्व है। मंदिरों का सम्बन्ध विभिन्न धर्म के लोगो से है, जो अलग-अलग काल खण्डों में विभिन्न शासकों ने बनवाये । श्यामला माता शक्ति की प्रतीक हैं। इनका सम्बंध तोमर राजपूतों की कुलदेवी से है। हमारे देश में अलग-अलग राजपूतों की अलग-अलग कुलदेवी है। जैसे जादौन राजपूतों की करौली देवी, मुरैना के तोमर राजपूतों की चिल्लादेवी, राजावतों की जमुआदेवी जो जयपुर के पास स्थित है। जैसलमेर के भाटी राजपूतों की करणीदेवी एवं सिकरवार (बढ़गूजर) की कुलदेवी सती माता हैं। गढ़ी के उत्तरी भाग में मुख्य भवन के बगल में श्यामल मता का मंदिर स्थापित है। श्यामल माता गढ़ी में निवास करने वाले मोहना के तोमर जागीरदारों की कुलदेवी हैं।

पूर्व में इस मंदिर का खिड़की जैसा छोटा सा दरवाजा था। संभवतया मध्यकाल में होने वाले आक्रमणों से सुरक्षा हेतु श्यामल माता का मंदिर छोटा बनवाया होगा, ताकि माता की मूर्ति आक्रमणकारियों के हाथों में ना पड़े और धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचे। मंदिर में श्यामल-माता की मूर्ति के ठीक बगल में विघ्नविनाशक श्रीगणेश की प्रतिमा भी स्थापित है। ये दोनों प्रतिमाएं मध्यकालीन हैं। सन् 1973 ई. में गढ़ी से प्राप्त सामग्री से ठाकुर नरेन्द्र सिंह काकाजी ने मंदिर का पुर्ननिर्माण करवाया है। वर्तमान समय में इस मंदिर में जागीरदार के परिवारजनों के अतिरिक्त गांव के निवासी भी इस मंदिर में नवदुर्गा आदि धार्मिक अवसर पर पूजन हेतु आते हैं। गढ़ी में ही श्यामल माता के मंदिर के ठीक सामने हनुमानजी की प्रतिमा स्थापित है। यह प्रतिमा छोटे से मंदिर में स्थापित है। प्रतिमा जागीरदार कालीन है। इस मंदिर में भी वर्तमान समय में यहां के निवासी पूजा करते हैं।

आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक सनातन धर्म को मानने वाले लोग त्रिदेव को मानते हैं ब्रम्हा विष्णु एवं महेश ब्रम्हा सृष्टि के उत्पादनकर्ता, विष्णु पालनकर्ता एवं महेश सृष्टि के संघहारक हैं। श्यामल माता के मंदिर के चबूतरे से लगा हुआ पीपल का पेड़ है। इस पेड़ के नीचे विष्णु लक्ष्मी की प्रतिमा रखी है । इस प्रतिमा के आस-पास अनेक शिवलिंग रखे हैं। इनमें से कुछ शिवलिंग खण्डित भी हैं। मुगलकालीन बादशाह औरंगजेब ने अपने शासनकाल में मंदिरों के विनाश का आदेश दिया था। मासिर-ए-आलमगीरी में स्पष्ट लिखा है कि 'उसने सब प्रान्तों के गर्वनरों को काफिरो के मंदिरों, स्कूलों एवं धार्मिक रिवाजों को नष्ट करने की आज्ञा प्रदान की। (9) इस आज्ञा के परिणामस्वरूप मंदिरों का विनाश एवं मूर्तियों को तोड़ा गया था। मोहना ग्राम के मुगलकालीन निर्मित सती स्मारक की कुछ मूर्तियां एवं शिवलिंग टूटे हुए हैं। इनके टूटने

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

या खण्डित किये जाने में औरंगजेब की धर्मान्धता का आभास होता है। पीपल के पेड़ के नीचे रखी हुई इन विष्णु-लक्ष्मी की प्रतिमा एवं शिवलिंग की पूजा वर्तमान समय में भी की जाती है।

संदर्भ सूची

1. ऋगवेद 10-15-8
2. मंडावा देवी सिंह " राजपूत शाखाओं का इतिहास" राजस्थानी साहित्य संस्थान जोधपुर संस्करण 2007 पृ.13
3. ग्यारहवीं सदी का भारत, पू. क्र. 113 एवं मित्र, जयशंकर - प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ. क्र. 18
4. खुराना के. एल. भारत का सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक इतिहास, पृ. क्र.35
5. द्विवेदी, हरिहर निवास कीर्ति स्तंभ पू. क्र. 165 व 166
6. मिश्र, जयशंकर प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ. क्र. 182
7. उपाध्याय, भगवतशरण भारतीय संस्कृति के स्त्रोत, पृ. क्र. 70
8. खुराना, के. एल. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ.क्र. 42
9. खुराना के. एल. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पृ. क्र. 91